Future of Online Education in India

भारत में ऑनलाइन शिक्षा का भविष्य

Editor : **Dr. Arti Vishnoi**

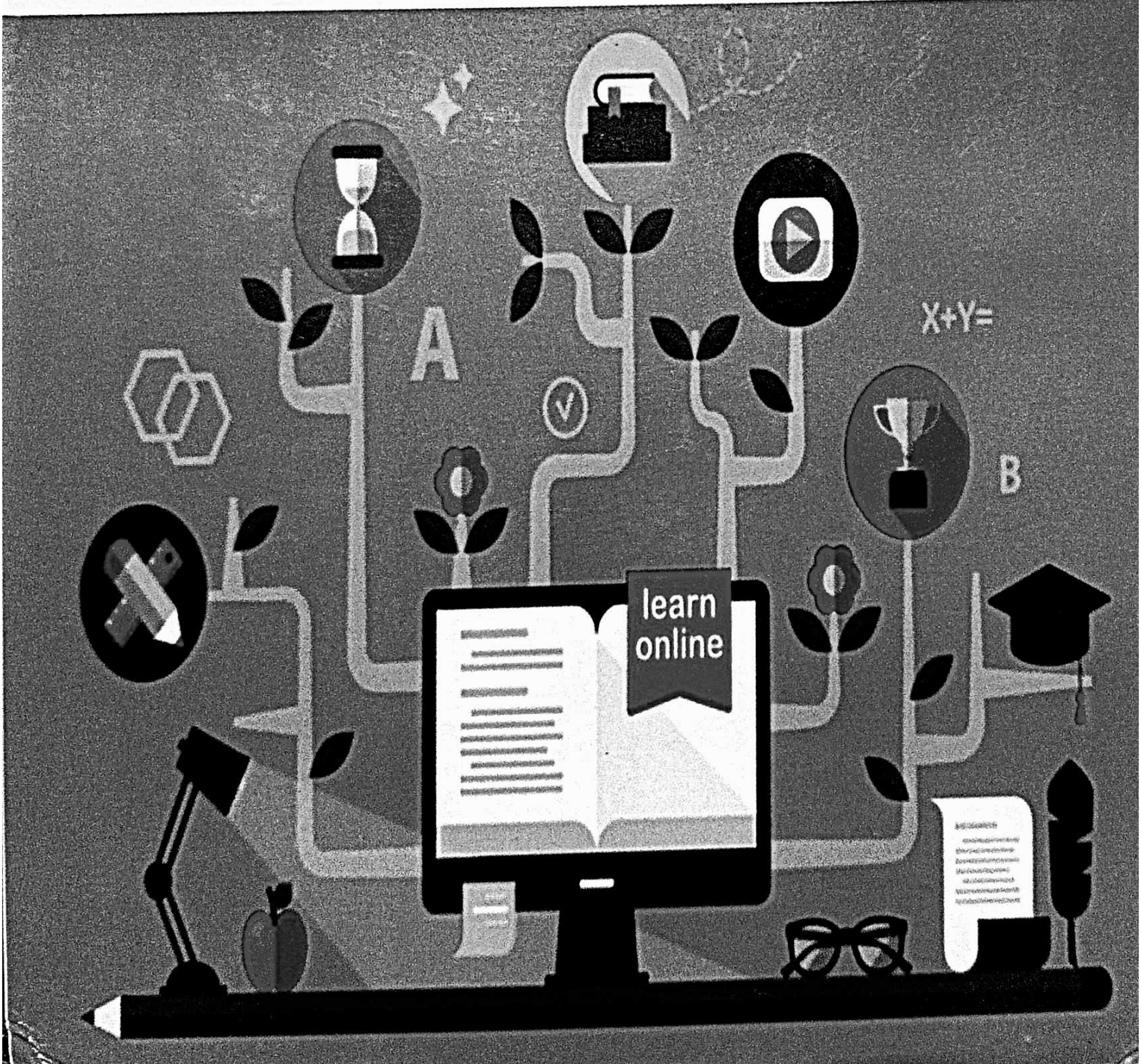

Future of Online Education in India

भारत में ऑनलाइन शिक्षा का भविष्य

Editor
Dr. Arti Visnoi

Samata Prakashan
Kanpur

ISBN : 978-81-947189-1-8

Price : 795.00 (Seven Hundred Ninty Five Only)

Book Name:

Future of Online Education in India

भारत में ऑनलाइन शिक्षा का भविष्य

Edited by :

Dr. Arti Visnoi

© **Reserved**

First Published : 2021

Typesetting :

Rudra Graphics

[All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, mechanical, photocopying, recording or otherwise, with out prior written permission of the publishers]

Published by

SAMATA PRAKASHAN

159/1 Ward No. 12, Bajrang Nagar, Rura,
Kanpur Dehat (U.P.) - 209 303
Mob. : 9450139012, 9936565601
Email - samataprakashanrura@gmail.com

PRINTED IN INDIA

Printed at Sarthak Printer, Kanpur.

15. IMPACT ON COVID-19 ON ONLINE EDUCATION
Shashi Shekhar
16. CHALLENGES OF ONLINE EDUCATION IN INDIA 129
Ouseen Gautam
17. ऑनलाइन शिक्षा व ऑफलाइन शिक्षा में अन्तर 134
डॉ. मीना गुप्ता
18. भारत में ऑनलाइन शिक्षा का भविष्य 141
डॉ. निधि कश्यप, अनुराधा पाण्डेय
19. प्रौद्योगिकी तथा ई–लर्निंग में युवाओं का भविष्य 145
डॉ. एम.आर. आगर
20. लॉकडाउन एवं सोशल डिस्टेन्सिंग के दौर में शिक्षा–व्यवस्था 152
डॉ. हरिणी रानी आगर
21. ई–लर्निंग या प्रौद्योगिकीपरक शिक्षा 159
डॉ. आरती विश्नोई, शैलेश कुमार
22. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ऑनलाइन शिक्षा के फायदे व नुकसान 163
डॉ. निधि श्रीवास्तव, डॉ. सुधा अग्रवाल
23. ऑनलाइन शिक्षा का छात्रों पर प्रभाव 173
प्रा. रघुनाथ नामदेव वाकले
24. कोविड –19 महामारी में ऑनलाइन शिक्षा की प्रासांगिकता एवं चुनौतियाँ 178
चन्द्रप्रभा
25. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षा की चुनौतियाँ 183
डॉ. शेख शहेनाज अहेमद 187
26. भारतीय शैक्षिक व्यवस्था में ऑनलाइन शिक्षा का महत्व
डॉ. तुकाराम चाटे, डॉ. अरुण कुमार 193
27. ऑनलाइन शिक्षा एवं ई–कंटेंट का निर्माण
अनिल कुमार 199
28. शिक्षा नीति 2020 में ऑनलाइन शिक्षा की भूमिका
डॉ. जयश्री किनारीवाल–कुमावत 213
29. ऑनलाइन पर निर्भरता समस्त कार्यप्रणालियों की हानि या लाभ
प्रेम कमल उत्तम 217
30. शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में ऑनलाइन की उपयोगिता
सुधीर कुमार, सन्तोष कुमार शाहू 222
31. डिजिटल शिक्षा की प्रासंगिकता व चुनौतियां
लक्ष्मी देवी 227

25

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षा की चुनौतियाँ

डॉ. शेख शहेनाज अहेमद

यह एक अखण्ड सत्य है कि समाज देश तथा विश्व की तमाम गतिविधियाँ लगभग शिक्षा नीति पर ही आधारित होती हैं। या अगर कहें की समाज की नीव ही वर्तमान हो या भविष्य शिक्षा पर टिकी है तो बिल्कुल भी गलत नहीं होगा। उसका विशेष कारण इस बात से है की समय अगर उपयुक्त नही है एवं समय के साथ हम कुछ विशेष नही कर पाये तो यह निश्चित है की अपने कार्य क्षेत्र में कई मुना पीछे की ओर चले जायेंगे। जिससे हानि होना निश्चित ही है। आज के विकट समय में शिक्षा समस्त पहुलुओं से अधिक सभी के लिए एक चुनौती बन गई है। वैश्विक महामारी की यह अवस्था हमारे समाज को एक ऐसी दिशा में लाकर छोड़ा है जहां कि सभी कार्य सामान्य परिस्थितियों से बिल्कुल भिन्न हो गये हैं। दरअसल समस्त गतिविधियों को परखते हुए यह बात स्पष्ट है कि इस समय के मौजूदा संकटों के आधार पर हम महामारी के सन्दर्भ में यह बात अवश्य कह सकते हैं कि अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों की वैधानिकता में इस महामारी के कारण बहुत कुछ गिरावट आती हुई नजर आ रही है। हमारे देश के कई वैश्विक संगठन आदि की और जब निगाह जाती है तो सभी एक अथाह गहराई में डुबे हुए दिखते हैं। पर इसी बीच महगाई के इस दौर में प्रत्येक व्यक्ति का जीवन भी दुस्तर हो गया है। बेरोजगारी की मार झेल रहे युवा पीढ़ी का वर्तमान परिदृश्य की दृष्टि से अवलोकन किया जाय तो यह देखने को मिलता है कि पढ़ी–लिखी ग्रेजुएट पीढ़ी भी दर–बदर भटक रही है, एवं इसके अलावा भी अपनी योग्यता को दॉवपर लगाने का भी कोई खास मतलब नही है। तमाम गतिविधियों का अवलोकन किया जाय तो प्रत्येक वर्ग की समस्या इस समय अभावों से जूझना ही है। परन्तु इसमें भी सबसे अधिक अव्यवस्था मुख्यतः निचले तबके के लोगों का जन–जीवन अधिकांश अभावग्रसित हो गया है। सामान्य सी बात है कि प्रत्येक व्यक्तियों का जन–जीवन निरन्तर ही किसी–न–किसी तरह से वैश्विक स्थिति पर ही निर्भर करता है। मानव की

आवश्यक वस्तुओं का अर्जन भी उनके रोज के कियाओं पर ही समाप है। दरअसल एक तरह से देखा जाय तो वायरस एक ऐसा संक्रमण है जो कि प्रत्येक विभाग में अपनी छाप छोड़ कर उनको अपनी गिरफ्त में ले लिया है।

हालांकि यह वायरस प्राकृतिक आपदा नही है परन्तु यह कहा जाता है कि तापमान में वृद्धि भी संसार में नये और खतरनाक वायरस को जन्म देने में सहायक है। हर संकट के पीछे कुछ न कुछ कारण अवश्य ही होता है, इसका भी है प्रायः यही माना जा रहा है कि चीन में खान–पान की लापरवाही से यह वायरस आया है। परन्तु ठोस तथा प्रमुख कारण अब तक नही मालुम हुआ जिससे की इस पर काबू पाया जा सके, जीवन की पूरी तरह से गतिविधियां ही परिवर्तित हो गई है सामान्य सी बीमारी के कारण भी आज व्यक्ति इतना भयभीत है की वह इलाज के लिए चिकित्सक के पास तक नही जाता है उसे यह भय रहता है की कही कोरोना तो नही इस प्रकार की चिंताएं लोगों अन्दर ही अन्दर पूरी तरह से तोड़ रही हैं। इस बात को लेकर पूरे देश में सहमति है कि अगले आने वाले भविष्य में इसका प्रभाव अधिकतर दिखेगा। क्योंकि अगले कुछ सालों तक कोविड–19 के प्रभाव से जूझती रहेगी एवं फिर उबरने के बाद पुनर्निर्माण की प्रक्रिया में लग जायेंगें। जहां आज प्रत्येक स्तर पर लोगों के छोटे–मोटे कार्य नौकरी सब छूट गये हैं व्यापारिक काम बन्द होने पर किसी भी वस्तु की आपूर्ति नही हो पाती है। दरअसल इस वैश्विक महामारी के कारण सभी संस्थानों का पूर्णरूप से ठप होना एक तरह से युवाओं की विशेष प्रकार की हानि को दर्शाता है । युवा हमारे विश्व की बागडोर सम्भालने वाले कर्णधार हैं जिनके हांथों में सारे समाज की जिम्मेदारी का बोझ है। किन्तु शिक्षा के सम्बन्ध में यह कहना चाहेंगे की इसका ठप होना पूरे विश्व की हार है। इसकी पुष्टि इस समय सबसे दमरकारी एवं सर्वनाश का रूप लेती कोरोना महामारी की मार से है जो कि हमारे समाज को अस्त–व्यस्त कर मानव–जाति की विडम्बनाओं को और भी बढ़ावा दिया है। इसका प्रभाव समस्त कार्य–काल पर बहुत ही भयानक होने वाला है। वास्तव में कोरोना एक ऐसी वैश्विक समस्या बनकर सम्पूर्ण विश्व को तबाह कर दिया है प्रथम बार यह चीन से आया और देखते ही देखते सारे विश्व को अपने गिरफ्त में ले लिया है। यह वायरस पुर्णतः चीन से आया हुआ ही है, और धीरे–धीरे यह सारे संसार को अपने चपेट में ले चुका है। शनैः शनैः यह कोरोना एक छोटे से वायरस से एक वैश्विक महामारी के रूप में सभी प्राणियों की रोजमर्रा के जीवन पर अपना स्थान बना लिया है। इसके आने से सम्पूर्ण विश्व के साथ जुड़ी अनेक मजबूत प्रणालियों का आपस में जो व्यापारिक या गैर व्यापारिक सबंध थे वो भी अब कोरोना की महामारी के कारण ये सभी कार्य पूर्णतः स्थगित हो चुके हैं। इस

वायरस से लगभग सारे काम ठप हो गये हैं लेकिन मुख्यरूप से शिक्षा एवं स्वास्थ्य अधिक ही प्रभावित हुए हैं जिसके वजह से आज तो समस्या है ही पर आने वाले दिनों में यह समस्या और भी बढ़ जायेगी जिसके प्रभाव से सारे कार्य हमेशा के लिए बदल जायेगें । आने वाले युवाओं का समय आज की परिस्थिति से साफ दिखाई दे रहा है कि किस प्रकार सभी जगहों पर लगातार तालाबन्दी का कहर तथा सोशल डिस्टेन्स की प्रक्रिया अपने चरम पर है और तबाही की पूरी तैयारी कर भविष्य की भयानक तस्वीर सबके सामने लाकर रख दी है। वर्तमान की दुविधा को देखते हुए सरकार ने शिक्षा को ऑनलाइन कर दिया है जिसके कारण शिक्षा का क्षेत्र उतना अधिक प्रभावित नहीं हो पा रहा है। उसका प्रमुख कारण है इस समय पर ऑनलाइन व्यवस्था जिसकी अनुमति सरकार के माध्यम से भी मिल चुकी है। विविध परेशानियों के बीच कहीं–न–कहीं एक प्रकाश है जिसके द्वारा इस विकट समय में भी हम अपना जीवन यापन कर पा रहे हैं। यह पूर्णतः सत्य है कि प्रत्येक परिस्थिति का प्रभाव मनुष्य की दिनचर्या पर ही होता है, चाहे वह हानिकारक हो या लाभदायक उसका भला या बुरा असर व्यक्ति को ही झेलना होता है। इसकी तो खबर सभी को है लेकिन उस पर भी सरकार की नीतियों के समक्ष हमारी रोजमर्रा की कार्यशैली भी निरन्तर प्रभावित होती है। वहीं इस काल में केन्द्र के नियमों में भी रोजाना बदलाव हो रहे हैं, उसकी भी मार सामाजिक व्यवस्था पर भी पड़ रही है।

यह भी कहा जा रहा है विशेषज्ञों कि दूरदर्शिता के अनुसार कि आने वाले कुछ दशकों के भीतर मुख्यतः युवाओं के भविष्य में कुछ बहुत महत्वपूर्ण बदलाव तथा कुछ खास तथ्य बहुत ही निर्णायक सिद्ध हो सकते हैं। क्योंकि जिस प्रकार शिक्षा की हालात है तो उसे देखकर ऐसा लगता है की हमारी विश्व शिक्षा प्रणाली पूर्णतः बदलाव की ओर अपने कदम बढ़ा रही है इसकी एक वजह यह भी है की युवाओं की दिनचर्या भी पहले की अपेक्षा काफी हद तक आज परिवर्तित हो चुकी है। जिस प्रक्रिया से पूरा विश्व एक महामारी से गुजर रहा है.और इस महामारी ने हम सब को आतंकित किया है। सभी जगह भय का माहौल बना हुआ है। सब लोग प्रायः अपनी जीवनशैली चिंता तथा अभाव में जी रहे है इस कोरोना के वजह से और इस लॉकडाउन की वजह से सबका जीवन अस्त व्यस्त हो गया है। ऐसे धैर्य और विशेषकर स्वास्थ्य की देखभाल की आवश्यकता है जो कि आने वाले भविष्य को भी पूर्णतः सुरक्षित करने में हमारी मदद करेगी जिससे हम फिर से अपनी–अपनी दिनचर्या को उसी प्रकार बिताने के लिए विचार कर सकते हैं। और यह इन्सान को जोड़ने के बजाय तोड़ने का काम करता है।

इस अवस्था में उन असहाय परिवारों के विषय मे विचार करिए जो की सरकारी स्कूलों में बच्चों को पढाते है तथा उनके बच्चों को एक बार का भोजन वहीं मिल जाया करते थे कहने का तात्पर्य यह है की शिक्षा और भूंख दोनो की सुविधा से आज वह वन्चित हैं फिर हमारा आने वाला युवा और देश का भविष्य किस तरह से सुरक्षित रह सकता है ?जो सहायता राशि भी सरकार की तरफ से जनता तक पहुँचाई जाती है उसको भी इमानदारी से उनतक नहीं पहुंचने दिया जाता है। वास्तव में आज इस बेहद कष्टकारी तथा विकट परिस्थिति में प्रत्येक प्राणी को जीवन–शैली के साथ ही साथ उसके ढंग को भी व्यवस्थित करना ही एक उचित निर्णय होगा। इसके साथ ही जो प्रमुख है वह है नयी शिक्षा नीतियाँ तैयार करने की पुरजोर प्रयास, और यह करना सरकार का प्रथम कार्य होना चाहिए, जिससे शिक्षा का घटता स्तर पुनः पटरी पर लाया जा सके उस विशाल भारत की कल्पना जो समस्त देशवासियों ने अपने मन में बना ली है वो अवश्य सफल हो ताकि देश की आंतरिक स्थिति के खराब होने का खामयाजा न भुगतना पड़े। भारतीय शिक्षा का जो पतन कोविड के इस संकट में हुआ है वह बदलना आवश्यक भी है। समस्त देशवासियों को मिलकर इस समस्या का समाधान खोजना अत्यन्त आवश्यक है। दरअसल छोटे–बड़े उद्योगों का जुड़ाव भी शिक्षा पर आधारित होता है, उनमें स्टेशनरी, साधारण छोटे वाहन, आदि स्कूलों पर ही निर्भर हुआ करते हैं। जिनका काम इस भयानक महामारी के बीच बन्द ही है यदि हमारे समाज की कार्यशैलियों की निरन्तर गतिविधियों पर भी सवालिया निगाह बन गई हैं। कॉलेज, स्कूल, कोचिंग, आदि सभी 'लॉकडाउन' की भेंट चढ़ रहे हैं। ''सोशल डिस्टेन्स'' ने इस प्रकार मानव–समाज को एक तरफ बाहरी रूप से तो दूरी बनाने में सफल हो ही गया है, बल्कि अपनी सुरक्षा को लेकर व्यक्ति मानसिक रूप से भी कोविड को लेकर कहीं–न–कहीं कुत्रिम मानसिकता का शिकार बनता जा रहा है। काफी उम्मीदें समाज में शिक्षा को लेकर जागृत होने लगी थीं किन्तु शिक्षा पद्धति पर कोरोना का कहर आने से आगे की पीढ़ी का भविष्य इसकी बलि चढ़ चुका है। सरकार की नीतियों के समक्ष हमारी रोजमर्रा की जिन्दगी तो भेंट चढ़ रही है वास्तव में जिस प्रकार से यह समस्या सभी के बीच आ खड़ी हुई है उससे और भी कठिनाइयाँ उत्पन्न हो रही हैं। भारतीय शिक्षा की तमाम नवीन योजनाएँ जो युवाओं के उज्वल भविष्य के लिए बनाई जा रही थीं वो सभी योजनाएँ 'कोविड' की गिरफ्त में फंस गए हैं। और शिक्षा सम्बन्धी बदलाव मे रोक लग गई है।यहां तक कि वह अपने आस–पास रह रहे रिश्तेदारों से मिलने भी भयभीत हो गए हैं। इसी 'डिस्टेन्स' ने शिक्षा का स्तर भी पूर्णतः बेपटरी पर ला दिया है, क्योंकि वहां तो काफी संख्या में विद्यार्थियों की भीड़ जमा रहती है। छात्रों की संख्या

के अनुमान से देखा जाय तो पता नहीं कितने छात्रों का भविष्य आज की इस महामारी में तबाह कर दिया है। कोरोना महामारी के चलते इस वर्ष सभी शिक्षा सम्बन्धी क्षेत्रों का यही हाल है। बल्कि शिक्षा एक ऐसा माध्यम हैं जिससे बहुत सारे व्यवसाय भी जुड़े हैं। जिनमें लाखों की संख्या में लोगों का घर चलता है। लेकिन महामारी का यह संकट उन परिवारों के मौजूदा हालातों को और भी बिगाड़कर रख दिया है। और आने वाले समय की प्रतीक्षा में समस्त मानव समाज इस महामारी को झेल रहा है। निरन्तर हो रहे बदलाव के कारण सभी ओर एक दहशत का वातावरण बन गया है सामान्य से सामान्य बीमारी भी आज कोरोना के गाल में फंसकर एक तरह से मौत का खौफ पैदा कर रही है। इसके साथ ही जो प्रमुख तथ्य है वह यह की नयी शिक्षा नीतियाँ तैयार करने की पुरजोर प्रयास, और यह करना सरकार का प्रथम कार्य होना चाहिए, जिससे शिक्षा का घटता स्तर पुनः पटरी पर लाया जा सके उस विशाल भारत की कल्पना जो समस्त देशवासियों ने अपने मन में बना ली है वो अवश्य सफल हो सकती है, बस हमें हार नहीं माननी है और निरन्तर अपने कार्य के प्रति सजग बने रहना है।

निष्कर्ष– वर्तमान में कोविड का प्रभाव सारे विश्व पर बहुत ही बहुलता से होता जा रहा है। और इसका असर भी प्रत्येक स्थान पर दिखाई देता है, कोई भी क्षेत्र इसके प्रभाव से अछूता नहीं है। अतः भविष्य में कभी भी इस महामारी का भयानक कहर युगों–युगों तक इस पृथ्वी पर समाज की गतिविधियों पर दिखाई देगा यह बिल्कुल सत्य और अखण्ड है जिसे मिटाया नहीं जा सक़ता है। अतः शिक्षा पर तो यह विशेषकर अपना कहर छोड़ रहा है जिसको बिल्कुल देखा भी जा सकता है। जिस प्रकार हमारे भारतीय शिक्षा के सुधार की दिशा प्रसस्त हुई तो यह भीषण महामारी हमारे भारतीय शिक्षा सम्बन्धी कार्यप्रणाली पूर्णतः ठप हो गयी है।यह बात पूरी तरह से सही है कि समाज और देश की नीव मूलरूप से शिक्षा के आधार पर ही चलती है, अतः अध्ययन तथा ज्ञान के आभाव से आने वाले सुखमय भविष्य की समस्त कल्पनाएँ व्यर्थ हो जाती हैं। काफी उम्मीदें समाज में शिक्षा को लेकर जागृत हुई युवाओं का शिक्षण कार्य प्रभावित होने के पश्चात् सभी ओर एक चिंता का माहौल बन गया है। वास्तव में इस संकट की परिस्थिति में हमारे देश का आने वाला भविष्य जो कि युवाओं की शिक्षा एवं स्वास्थ्य दृढ़ता पर निर्भर है, उसपर कोविड का खतरा हमारे भारतीय शिक्षण प्रणालियों को बहुत अधिक प्रभावित कर रहा है। सरकार के नियमों में भी रोज नये बदलाव हो रहे हैं, कहीं से नहीं तो यदि शासन–प्रशासन की नजर हमारे शिक्षा – जगत की ओर उपयुक्तता की दृष्टि से पड़े तो सम्भव है कि इस कठिन समय में समाज को कुछ राहत मिले। एक के बाद एक

नवीनता भरे नियमों को देख सुनकर सामान्य जन–जीवन तो बिल्कुल शिक्षा को लेकर हताश हो रहा है। विश्व आंकड़ों पर अगर निगाह घुमाई जाय तो इक्कीसवीं शताब्दी में अभी तक की सबसे भयानक एक संकट भरी समस्या या कहें की इतनी आपदा के रूप आये कोरोनावायरस ने सम्पूर्ण विश्व का विकास सम्बन्धी गतिविधियों को लेकर बहुत अधिक चिंतित हैं। क्योंकि 'कोविड' का प्रहार जितना स्वास्थ्य पर हुआ है उससे कहीं अधिक इसका प्रभाव देश की रीढ़ कहें जाने वाली अर्थव्यवस्था तथा शिक्षा जिसपर सभी क्षेत्रों का भार होता है। और कुल मिलाकर हमारे समय की गति अध्ययन क्षेत्र की कार्य प्रणालियों पर ही निश्चित होती है।

सन्दर्भ

1. नया ज्ञानोदय अप्रैल जुलाई 2020
2. आजकल पत्रिका 2019
3. साहित्य अमृत पत्रिका 2015
4. दैनिक जागरण समाचार पत्र
5. **agrawal deepshikha (2009)role ofe-learning in a developing country like india .proceeding 3rd nationalbconfrence**
6. **dhawans, (2020), onlinelurning; covid-19 crisis.**

सहायक प्राध्यापक, हिंदी-विभाग
हुतात्मा जयवंतराव पाटील महाविद्यालय हिमायतनगर,
जिला- नांदेड (महाराष्ट्र)